Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce

Date: Lecture: 93

Page:

Sub:- Financial Accounting (Hons)
Paper:- 1st
SNSRKS College, Saharsa

* Bcom Part - 1st

* Introduction

** Definition of Indian Accounting System **
(भारतीय बहीखाता प्रणाली की परिभाषा)

सौदे का लेखांकन कुछ निश्चित पुस्तकों (जिन्हें बहियां कहा जाता है) में कुछ निश्चित सिद्धांतों के आधार पर भारतीय परम्परा के अनुसार जब किसी भी भारतीय भाषा में किया जाता है, तो उसे 'भारतीय बहीखाता प्रणाली (Indian System of Accounts) कहा जाता है। यह भाषा हिन्दी, उर्दू, मुड़िया, मराठी, गुजराती या अन्य कोई भारतीय भाषा हो सकती है। प्रायः मुड़िया भाषा का प्रयोग किया जाता है।

* भारतीय बहीखाता प्रणाली की विशेषताएं *

भारतीय बहीखाता प्रणाली की कुछ निम्न विशेषताएं है जो इसे अंग्रेजी प्रणाली से भिन्न बनाती है:

1) इस प्रणाली में लम्बी-लम्बी बहियों का प्रयोग होता है। इसके पन्ने बिना रूल (लाइन) के होते है और ऊपर लाल कवर चढ़ा होता है। ऐसा शायद इसलिए किया जाता है कि लाल रंग हनुमान जी का है और लाल रंग में कीड़े कम लगते हैं।

2) बहियों में खाने नहीं बनाये जाते वरन् लेखा करने के लिए आठ या छह सलों में मोड़ लिया जाता है।

3) बहियां सदैव किसी भारतीय भाषा में लिखी जाती हैं।

4) बायीं ओर को जमा और दाहिनी ओर को नाम पक्ष कहा जाता है।

Date: .....
Page: .....

दोनों पक्षों के योग एक ही पंक्ति में नहीं लिखे जाते वरन् अंतिम प्रविष्टि के ठीक नीचे लिखे जाते हैं।

6) भारतीय पद्धति में रकम लिखने का ढंग अंग्रेजी पद्धति से अलग है। भारतीय पद्धति में रुपये व पैसे लिखने के लिए अलग-अलग खानों की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि एक ही खाने में पूरी रकम लिख दी जाती है।

7) भारतीय पद्धति में रकम लिखने का ढंग अंग्रेजी पद्धति से अलग है। तथा साथ ही भारतीय बहीखाता में कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग होता है तथा इनका विशेष अर्थ होता है। उदाहरण के लिए, महीने के शुरू के पखवाड़े को, जो कि विक्रमीय संवत् के अनुसार गिना जाता है, बदी कहते हैं और महीने के बाद के आधे भाग को सुदी। इन्दराज, उचन्ती, रहतिया अन्य शब्द हैं, जिनका आशय तत्संबंधी अगले अध्यायों में स्पष्ट किया जाएगा।

* भारतीय बहीखाता प्रणाली के उद्देश्य *

भारतीय बहीखाता प्रणाली का मुख्य उद्देश्य व्यापारिक लेन-देनों का ठीक-ठीक ज्ञान प्रदान करना है। सौदे (या लेन-देनों) को स्मरण रखने की कठिनाई के निवारण के अतिरिक्त उचित प्रकार से किया गया बहीखाता निम्नांकित उद्देश्य भी पूरे करता है: (1) किस-किस से कितना लेना है और किस-किस को कितना देना? (2) व्यापार में कौन सम्पत्ति कितनी-कितनी है और कौन से दायित्व हैं? (3) व्यापार में लाभ हो रहा है या हानि? (4) व्यापार में कितनी पूंजी लगी हुई है? (5) व्यापार की वित्तीय स्थिति क्या है?

The end

Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS College, Saharsa